मुख्य स्टोरी

इतिहास का विनिर्माण

अपने राजनीतिक एजेंडे के अनुरूप इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के पुनर्लेखन से लेकर विज्ञान व वैज्ञानिक प्रवृत्ति का महत्व कम करना, शिक्षा में भाजपा शासन द्वारा किये गये "सुधार" प्रतिगामी रहे हैं~ज़िया अस सलाम

बीजेपी नेताओं द्वारा की जाने वाली निरर्थक बातों के अनुक्रम में नवीनतम बीजेपी की राजस्थान यूनिट के अध्यक्ष मदन लाई सैनी द्वारा बोली गयी बात है, जिसमें उन्होंने कहा: " जब हुमायूं मर रहा था, उस समय उसने बाबर को बुलाकर कहा अगर तुमको हिंदुस्तान में शासन करना है तो तीन चीजों का ध्यान रखना, एक गाय, दूसरा ब्राह्मण और फिर महिला, इनका अपमान नहीं होना चाहिए। रिकॉर्ड की बात करें, तो मुगल वंश के संस्थापक हुमायूँ के पिता बाबर थे। तथा इतिहासकारों का कहना है कि न ही उसने और न ही उसके पुत्र ने सैनी द्वारा कही गयी बातों में से कुछ भी कहा था। इसके विपरीत, कई इतिहासकारों का मानना है कि जब हुमायूँ गंभीर रूप से बीमार पड़ा था, तो बाबर ने हुमायूं के पलंग की परिक्रमा करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की थी कि ईश्वर उसके प्राण ले और उसके बेटे को जीवनदान दे।' इसके कुछ समय बाद बाबर की मृत्यु हो गई और हुमायूँ दूसरे मुगल सम्राट के रूप में जीवित रह गया था।

सैनी इतिहास के बारे में ऐसे असाधारण विचार रखने वाले इकलौते नहीं हैं। पार्टी में उनके सहयोगी और उत्तर प्रदेश के एक विधायक संगीत सोम ने एक बार मुगल इतिहास के बारे में वाक्पटुता व्यक्त की थी, "ताजमहल का निर्माण एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया था जिसने अपने पिता को कैद कर लिया था। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने अकबर को "एक विदेशी आक्रांता" और राणा प्रताप को "विदेशी शासन का सिंहासन हिलाने वाला" कहा है।

तथ्य यह है कि शाहजहाँ ने अपने पिता को कैद नहीं किया था। बल्कि वह अपने बेटे औरंगज़ेब द्वारा कैद किया था। और आदित्यनाथ का दावा चाहे जो भी हो, परंतु अकबर विदेशी नहीं थे। उनका जन्म सिंध प्रांत के अमरकोट में हुआ था, जो भारत का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा था। उनके जन्म के 400 साल बाद पाकिस्तान का निर्माण हुआ और अमरकोट नए देश का हिस्सा बना। संयोग से, अकबर ने मेवाड़ के राणा, महाराणा प्रताप और मुगल सेना के बीच लड़ा गया हल्दीघाटी की युद्ध जीता था।

जामिया मिलिया इस्लामिया के इतिहासकार प्रो. रिज़वान क़ैसर हिंदुत्व ब्रिगेड को "ज्ञान-विरोधी" कहते हैं। "ज्ञान उन्हें डराता है," वे कहते हैं। “वे जो कर रहे हैं वह पूरी तरह से इतिहास की विकृति है। वे तथ्य का स्वयं निर्माण कर रहे हैं। भगवाकरण में, आप मत को थोड़ा बदल सकते हैं, लेकिन तथ्य स्तंभित हैं। उन्हें बदला नहीं जा सकता। स्वतंत्रता संग्राम में राणा प्रताप या हेमू या आरएसएस [राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ] की भूमिका के बारे में वे कुछ भी कह सकते हैं, वह सब कुछ लिखित और ज्ञात है। अब वे तथ्यों का निर्माण कर रहे हैं। इस तरह के कार्यों के साथ, वे खुद को पूरी तरह से इतिहास से अज्ञात बना रहे हैं। "

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सैयद अली नदीम रिजवी का कहना है: “जब भी और जहाँ भी बीजेपी सत्ता हासिल करती है, किसी भी अन्य फासीवादी समूह की तरह, यह हमारे इतिहास के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश करती है। जब अटल बिहारी वाजपेयी ने पहली एनडीए [राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन] सरकार का गठन किया, तो इस सरकार ने स्कूली पाठ्यपुस्तकों को बदलने का ठोस प्रयास किया था। पुरानी एनसीईआरटी [नेशनल काउंसिल फॉर एजुकेशनल रीसर्च एंड ट्रेनिंग] इतिहास की पाठ्यपुस्तकों को हटा दिया गया था और भगवा पृष्ठभूमि वाले कुछ विद्वानों को पाठ्य पुस्तकें फिर से लिखने के लिए नियुक्त किया गया था। हर तरफ से विरोध के कारण उनके प्रयास विफल रहे। अब नरेंद्र मोदी की सरकार में मानव संसाधन विकास मंत्री के रूप में पहले स्मृति ईरानी, फिर प्रकाश जावड़ेकर, पूरी तरह से हमारी पूरी शैक्षणिक व्यवस्था को खत्म करने के लिए काफी मजबूत प्रयास कर रहे हैं। इस बार का हमला केवल इतिहास की कुछ व्याख्याओं पर नहीं बल्कि पूरे शिक्षण सिस्टम और शिक्षण संस्थानों पर है। ”

प्रचारित किये जा रहे इतिहास के विकृत रूप में वल्लभभाई पटेल को हिंदू नेता कहा जा रहा है, जिन्हें कांग्रेस द्वारा अधिकारहीन कर दिया गया था तथा वी.डी. सावरकर को एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अभिवादन करने का प्रयास किया जा रहा है। ताजमहल के शिव मंदिर होने के अनुचित विवाद को भी नहीं भूलना चाहिए।

"इतिहास के स्रोत एक या हजार हो सकते हैं," क़ैसर कहते हैं।  “इतिहास की किसी भी घटना को दुनिया भर के इतिहासकारों द्वारा दर्ज किया जाता है। आप इसे यहां बदल सकते हैं, लेकिन दुनिया को किसी अन्य स्रोत से सच्चाई पता चल ही जाएगी। उदाहरण के लिए, अब वे कह रहे हैं कि सरदार पटेल भगत सिंह की तरह एक हिंदू नेता थे। जबकि वास्तविकता यह है कि सरदार पटेल ने भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित किए जाने का विरोध किया था। उनके और नेहरू, नेहरू और गांधी के विचारों में अंतर थे। लेकिन उन मतभेदों के आधार पर आप यह नहीं कह सकते कि नेहरू को छोड़कर कांग्रेस में कोई अन्य नेता ही नही था। भगत सिंह के लिए भी ऐसा ही है। ”महान स्वतंत्रता सेनानी और शहीद को एक ऐसा हिंदू नेता कहा जा रहा है, जो आर्य समाज में विश्वास रखते थे, जबकि उनके लेखन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे नास्तिक थे।

बिपन चंद्र की कालातीत पुस्तक इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस में भगत सिंह को क्रांतिकारक आतंकवादी कहने पर उनकी आलोचना की जा रही है। “उस अभिव्यक्ति में क्या गलत है? इसमें किसी तरह का अपमान नही किया गया था। लेकिन उन्हें पता नहीं होगा। हिंदुत्व ब्रिगेड को लगता है कि वे यहां हमेशा शासन करेंगे। यह वही मानसिकता है जिसे उन्होंने 2004 में झेला था। सिर्फ इसलिए कि आज सत्ता आपके पास हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि आपको सभी शक्तियाँ प्राप्त हो गयी हैं। सत्ता समय के साथ बदलती है। तथ्य वही रहते हैं, ”क़ैसर का कहना है।

राजस्थान सरकार द्वारा वी. डी. सावरकर के व्यक्तित्व को अच्छा दिखाने का प्रयास किया गया है। इतना ही नहीं हिंदुत्व के इस संस्थापक पिता के लिए महात्मा गांधी को भी जगह छोड़नी पड़ रही है।